Shree Shivkrupanand Swami

'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| Whole World is a Family ||

ॐ

28/5/13

"महाशिबीर का आनंद"

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार - - -

अभी हाल ही मे "शिर्डी महाशिबीर" का एक सफल आयोजन हुआ है, 2008 मे जो महाशिबीर बंद हो गये थे उनका श्री साईबाबा की कृपा मे फीर से प्रारंभ हुआ है। महाशिबीर का आयोजन सदैव साधको के लीये एक "गुरुकार्य" करने का अच्छा सुअवसर होता है, और सोसे सुअवसर का साधको ने पुर्ण पुर्ण लाभ लीया है। महाशिबीर के निमीत्य से सदैव साधको को सदैव ही एक दुसरे को जानने का समझने का और अपने को आये नये नये अनुभवो को बांटने का अवसर होता है, और इस अवसर का साधको ने खुब लाभ लीया है।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

|| जय बाबा स्वामी ||
|| Whole World is a Family ||

समुचे 8 दिनो मे दिवाली जैसा ही उत्सव का वातावरण था। इसी अच्छी स्थिती के कारण प्रवचन की समयावधी भी बढ गयी थी और मैने भी खुब आंनद लिया। कब "आठ दिन" समाप्त हुये पता भी नही चला। आप सबके इस सामुहिक प्रयास से मुझे आंन्तरीक प्रसन्नता प्राप्त हुयी है।

विशेष प्रसन्नता मुझे तब हुयी तब महाशिबीर की समाप्ती के बाद शिर्डी ग्रामवासीयो से जानकारी मिली इतना बडा आयोजन इतने शांन्ती से "शिर्डी" मे कभी भी हुआ ही नही था और न ही कभी इतनी भीड आठ दिन "शिर्डी" मे कभी हुयी थी और आपके साधको का व्यवहार सभी लोगो से बहुत ही शालीनता का था साधक बडे ही नम्र थे। सभी साधक शांन्त और संस्कारी थे।

Shree Shivkrupanand Swami
'Samarpan Bhavan', Eru-Abrama Road, Near Gandhi Smriti Station (W),
Eru, Dist.-Navsari,Gujarat - 396450. India. Phone : 02637 - 324755 / 093288 10888
Website : www.samarpanmeditation.org

॥ जय बाबा स्वामी ॥
|| Whole World is a Family ||

दुसरे दिन शाम को मैने श्री जंगली महाराज के आश्राम का दौरा कीया। वहा रहने वाले "गुजरात के साधको" की तारीफ वहा के साधु और संतो से मीली आश्राम मे साधक "गरबा" रमते थे हमारे आश्राम के कार्य मे मदत करते थे हमारे आश्राम मे तो दिवाली ही मनायी गयी। एक माँ को अपने बच्चो की तारीफ बाहर के लोगो द्वारा की गयी तो माँ तो प्रसन्न होगी ही ऐसी ही माँ की स्थिती मेरी थी मुझे भी खुशी तभी होती है। जब कोई साधको की प्रंशसा करता है। और साधक भी प्रंशसनीय कार्य करते है। उस दिन मुझे लगा की आप मेरे प्रतिनीधी है। प्रत्येक मनुष्य चाहे तो भी मुझसे नही मिल सकता है, लेकीन आपका आचरण देख कर ही मुझे जान सकता है।

इस लीये सदैव कोई भी कार्य करते समय कोई भी बर्ताव करते समय आप भी अपने आप को आत्मा मानो और आपकी आत्मा मेरी आत्मा से भितर से जुडी है। वह आपसे ऐसा कोई कार्य हो नही करने देगी जो कार्य मै नही कर सकता क्योकी समाज के लीये तो आप ही "स्वामी" है।

जब मै शाम को जंगली महाराज के आश्रम मे गया तो वहा ध्यान चल रहा था वहाँ के साधु मुझे ध्यान कक्ष मे अपने साथ ले के गये और उनके गुरुजी ध्यान करा रहे थे उनके पास ले जाकर बैठा दीया। और मेरे पिछे वे बैठ गये याने मै चाहो तो भी उठकर नही जा सकता था मै ध्यान मे बैठा रहा जब की इतनी भीड मे पास पास बैठ कर ध्यान करने की आदत मुझे नही है। भिड की मुझे तकलीफ होने लग

श्री शिवकृपानंद स्वामी

'समर्पण भवन', एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org

।। जय बाबा स्वामी ।।

।। वसुधैव कुटुंबकम् ।।

गयी तभी मेरी आत्मा ने रास्ता निकाला मेरी आत्मा शरीर छोडकर खुब ऊंचायी पर आकाश मे ठीक मेरे शरीर के उपर जाकर स्थीत हो गयी और मै आकाश से ध्यान कक्ष मे चल रहा ध्यान देख रहा था, लेकीन मै ध्यान कक्ष मे नही था और न ही वहा के भिड की मुझे तकलीफ हो रही थी और ऐसा ध्यान काफी समय तक चला ध्यान समाप्त भी हो गया सभी लोग उठ गये लेकीन मै ध्यान मे ही बैठा रहा बाद मे गुरुजी ने दोनो पैर पकड कर मुझे जोर से हिलाया "उठो" तब मै अचानक उठा लेकीन फीर भी मुझे इतने उपर से शरीर मे आने काफी "समय" लगा याने परीस्थीतीया प्रतीकुल हो तो आत्मा कोई न कोई मार्ग निकाल ही लेती है, परीस्थीती मे से यह अनुभव आया ऐसा ध्यान मैने कई बार कीया है,

(6)

लेकीन वैसा ध्यान अपनी इच्छा से करता था लेकीन परसो यह जबरजस्ती से परिस्थीती के कारण हुआ।

दोनो स्थितो मे शरीर और आत्मा का कोई भी संमन्ध नही होता केवल एक बारीक सा तार चांदी के रंग का शरीर और आत्मा के बीच जुडा रहता है, मानो पंतग का धागा हो उसी तार के आधार से ही आत्मा शरीर मे वापस आ पाती है, इस तार के अलावा आत्मा का शरीर से कोई संमन्ध ही नही होता बाद मे उन्होने मुझे सपुर्ण आश्रम दिखाया आज मुझे आया नया अनुभव आपके साथ "बांट" रहा हु। इस अनुभव से यह समझा जा सकता है, की आत्मा को भी अनुकुल वातावरण चाहिये अन्यथा वह कभी भी शरीर छोडकर जा सकती है,

इसलीये लगता है, कोइ भी "माध्यम" की कभी भी मृत्यु न हुयी होगी। प्रत्येक माध्यम ने उसके आसपास निर्माण प्रतिकुल वातावरण के कारण ही देहत्याग कीया होगा। तो माध्यम का "जिवन" तो उसके शिष्यो के हाथो मे ही होता है, की वे माध्यम को कितने समय उसकी "आत्मा" के अनुकुल वातावरण दे पाते है, क्योकी सामान्य मनुष्य जैसी "माध्यम" की मृत्यु नही होती "माध्यम" शरीर दिखता है, लेकीन वह शरीर कभीभी होता ही नही है, वह एक पवीत्र आत्मा होता है, जिसको अपने अनुकुल वातावरण लगता है, तभी वह शरीर मे रहता है। अब अनुकुल वातावरण शिष्य वर्ग कब तक दे पाता है, इसी पर "माध्यम" का जीवन निर्भर रहता है।

श्री शिवकृपानंद स्वामी
' समर्पण भवन ' , एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org
।। जय बाबा स्वामी ।।
।। वसुधैव कुटुंबकम् ।।

याने माध्यम की मृत्यु शिष्यो के कारण ही होती है। क्योंकी माध्यम को सर्वसाधारण मनुष्य जैसा देह का आकर्षण नही होता है, जब तक आत्मा को देह का उपयोग दिखता है, तभी तक वह शरीर मे रहती है, क्योंकी शरीर के बाहर जाकर रहने की उसकी "साधना" होती है, और सदैव शरीर मे वापस आना या न आना यह निर्णय "आत्मा" स्वंयम लेती है, अगर परसो शाम आत्मा वापस शरीर मे नही आती तो वह देह की "मृत्यु" ही थी। लेकीन वापस आयी याने इस देह का और भविष्य मे उपयोग होने वाला होगा। यह स्थिती मे गहन ध्यान अनुष्ठान मे 45 दिन देह रहता है, याने देह इस स्थिती का अभ्यस्थ है। इस स्थिती मे जाया तो बडी आसानी से जाता है।

(9)

लेकीन इस स्थिती बाहर आना कठीण होता है, परसो गुरुजी हिलाया इस लीये बाहर आ पाया अन्यथा कितने समय बैठता वह निश्चीत ही नही था, हो सकता है, कई दिनो तक भी बैठता क्योकी शरीर मे ही आत्मा नही होती तो शरीर की आवश्यकताएं जैसे पेशाब करना या पैर जकडना ऐसा कुछ व्यवधान आत्मा को नही होना है,

दुसरा मुझे सदैव लगता है, की साधक और मेरे बीच का अंन्तर दिन प्रतिदीन बढ रहा है, और इसी लीये मेरी बतायी बाते साधको को समझ मे नही आती है, यह सब इस लीये भी हो रहा है, क्योकी साधक सपुर्ण समर्पीत नही है, अन्यथा मेरी स्थिती उनकी भी होती लेकीन ऐसा है, क्या नही और आध्यात्मीक क्षेत्र मे दिखावे को कोई स्थान ही नही है,

श्री शिवकृपानंद स्वामी

' समर्पण भवन ' , एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org

।। वसुधैव कुटुंबकम् ।।

याने अगर हम समर्पण है। यह नाटक कर रहे है,
या दिखावा कर रहे है। तो हम हमारी आत्मा
के विरोध मे ही कार्य कर रहे है, क्योकी
हमारी आत्मा का समर्पण का भाव नही है। लेकीन
फीर भी समर्पण का भाव है। यह हम दिखा
रहे है, मै आपको १००% समर्पीत हु। लेकीन
आप मुझे कितने समर्पीत है। यह प्रश्न आप
एकान्त मे अपनी "आत्मा को पुछो क्योकी
अगर आप भी मुझे १००% समर्पीत हो तो
आपकी भी स्थिती मेरे ही समान होना चाहिये
क्यो नही है। क्योकी आपने अपना "मै" का
अंहकार अभी भी समर्पीत नही किया है।
मुझे सब दिखता है। लेकीन तुम्हारा अंहकार
तुम्हारी अपनी निजी सम्पती है। वह मै आपसे
छीन कर कैसे ले सकता हु। अब वह
आप ही की सम्पती है।

श्री शिवकृपानंद स्वामी

' समर्पण भवन ' , एरु - अब्रामा रोड, गाँधी स्मृति स्टेशन के पास (पश्चिम), एरु,
जिल्ला - नवसारी, गुजरात - 396450, भारत. फोन : 02637 - 324755 / 09328810888
Website : www.samarpanmeditation.org

।। वसुधैव कुटुंबकम्।।

(11)

आप जब समर्पीत करेगे तब तक मुझे उसकी राह देखने के अलावा मैं कर ही क्या सकता हु। जब तक आपको ही उसका मोह है, और आप ही भितर उसे समर्पीत करना नही चाहते- मैं आपसे आपकी सम्पत्ती जबरजस्ती कैसे ले सकता हु। अब मुझे लगा वह मैंने बता दिया आपको आप जानो आप सभी को खुब खुब आशिर्वाद - - -

आपकी सम्पती का याचक
आपकी सम्पती का प्रतिक्षारत
बाबास्वामी
28/5/13